Indian J. Soc. & Pol. 06 (02):109-112 :2019 **ISSN: 2348-0084(P)**
ISSN: 2455-2127(O)

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रभावित करने वाली चुनौतियाँ लखनऊ जिले का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुनीता भारती[1]
[1]शोध छात्रा, समाजाशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

इस शोध पत्र में यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनके सामाजिक–आर्थिक कारणों से विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर बहुत कम अध्ययन किये गये है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से तात्पर्य ऐसे विद्यार्थियों से है जो अपने परिवार में कॉलेज या विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाला पहला है। उसके अतिरिक्त परिवार में उच्च शिक्षा किसी भी सदस्य ने नही प्राप्त की। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करनें में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उनके अभिभावकों का उच्च शिक्षा प्राप्त न कर पाना उनकी आर्थिक एवं सामाजिक आदि कारक प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रभावित करते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों के द्वारा कॉलेज एवं विश्वविद्यालय के चुनाव के लिए उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के प्रसार को देखते हुए निम्न स्तर से भी आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेजों में प्रवेश ले रहे है। किन्तु उन्हें प्रवेश प्रक्रिया के समय भी उनकी स्थिति को देखते हुए भी उन्हें प्रवेश लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अध्ययन कक्ष में पाठ्यक्रम एवं भाषा से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी सामाजिक अन्तः क्रिया करने में संकोच करते है। जब उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का स्कूल से कॉलेज में प्रवेश होता है तो उस प्रक्रिया के दौरान भी उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियों का विस्तृत रूप से आगे प्रस्तुत किया जायेगा।

KEYWORDS: *शिक्षा, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी, चुनौतियाँ*

शिक्षा ही मानव जीवन को श्रेष्ठतम मार्ग प्रशस्त करने का एक माध्यम एवं गहन प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया को जब हम उच्चतम दृष्टिकोण से जानने, समझने का प्रयास करते हैं उच्च शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात ही मनुष्य अपने व्यवसाय का सफलतम मार्ग चयन करने में एवं सामाजिक समायोजन स्थापित करने में सफल हो पाता है क्योंकि किसी भी देश की प्रगति का प्रमुख तथा महत्वपूर्ण आधार उच्च शिक्षा ही है। उच्च शिक्षा ही मानव को अपने मूल्यों को प्राप्त करने का एक साधन है जिससे देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों को निभाने एवं भावी जीवन को सुदृढ़ मार्ग दर्शन प्रदान करने का कार्य कर सकता है तभी शिक्षा का सही मूल्यांकन किया जा सकता है और देश का सर्वागीण विकास सम्भव हो सकता है। शिक्षा प्राप्त करने के साथ ही साथ लोगों के विचारों, उनके परिवेशो, रहन सहन के स्तर तथा आर्थिक, सामाजिक प्रगति के आधार एवं मानव की संस्कृति में भी परिवर्तन आ जाता है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के प्रसार को देखते हुए निम्न स्तर से भी आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेजों में प्रवेश ले रहे है। उच्च शिक्षा प्राप्त करके अपने परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार करने का प्रयास करते है।

विद्यार्थी जो अपने परिवार में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला सबसे पहला है उसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के रूप में जाना जाता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी वे हैं जो अपने परिवार में कॉलेज में भाग लेने वाला पहला है (ब्रायन एंड सिमॉन्स, 2009)। इसके अलावा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों के पास हाई स्कूल की शिक्षा से परे कोई भी औपचारिक शिक्षा नहीं है (गिब्बन्स एंड बॉडर्स, 2010)। पहली पीढ़ी का विद्यार्थी शब्द आमतौर पर उन विद्यार्थियों को संदर्भित करता है जो अपने परिवार में उच्च शिक्षा संस्थान में दाखिला लेने वाला सबसे पहला व्यक्ति है। (गिब्बन्स एंड बॉडर्स, 2010) उन मध्य और हाई स्कूल के विद्यार्थियों को संदर्भित करते है जिनके अभिभावकों को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के रूप में औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त हुई।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रभावित करने वाले कारक

कई ऐसे कारक है जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों जिनके अभिभावकों ने हाई स्कूल से अधिक शिक्षा नहीं प्राप्त की हो उन्हें नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं जिनमें निम्न कारक शामिल हैः

कॉलेज के लिए अकादमिक तैयारी

जिन विद्यार्थियों के माता पिता कॉलेज नहीं गए थे उन विद्यार्थियों में अपने साथियों की तुलना में कॉलेज के लिए तैयार होने की सम्भावना कम होती है (चॉय, 2001) हाई स्कूल के कठोर पाठ्यक्रम में गणित को विशेष रूप से शामिल करने से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में कॉलेज जाने के अवसरों में वृद्धि होगी। और विद्यार्थी कॉलेज जाएंगे। (हार्न और नुनैज, 2000) ने पाया कि हाई स्कूल के पाठ्यक्रम में गणित को विशेष रूप से शामिल करने से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए दोगुना अधिक अवसरों की संभावना में वृद्धि होती

1: Corresponding Author

है तथा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा चार साल के पाठ्यक्रम में दाखिला लेने की संभावना बढ़ जाती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी पाठ्यक्रम की उपलब्धता की कमी के कारण, विशेष रूप से माता पिता के प्रोत्साहन की कमी के कारण इन विद्यार्थियों को प्रारंभिक पाठ्यक्रम ही लेना होता है। जैसा कि हॉर्न और नुनैज ने पाया कि माता पिता के प्रोत्साहन और भागीदारी से विद्यार्थियों की कठोर हाई स्कूल पाठ्यक्रम और कॉलेज में दाखिला लेने की संभावना बढ़ जाती है हालांकि अभी भी स्कूलों एवं कॉलेजों में सीमित पाठ्यक्रम है और पाठ्यक्रमों की उपलब्धता की समस्या आज भी विद्यमान है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों ने साक्षात्कार करते समय बताया कि उन्हें अपने परिवार से उचित मार्गदर्शन न मिलने के कारण उन्हें शैक्षणिक तैयारी करने में कठिनाई होती है।

कॉलेज के लिए आकांक्षाएं:

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को आठवीं कक्षा के आरंभ से उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के बारे में कम उम्मीदें होती है कि बारहवीं कक्षा में अपनी शिक्षा को जारी रख पायेंगें तथा उन्हें यह भी प्रतीत होता है अन्य विद्यार्थी उनकी तुलना में बेहतर है (चॉय, 2001)। बारहवीं कक्षा में केवल आधा (53 प्रतिशत) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी लगभग (90 प्रतिशत) अन्य विद्यार्थियों की तुलना में स्नातक की डिग्री अर्जित करने की उम्मीद करते हैं। (बर्कनर एंड चावेज़, 1997, चॉय, 2001) होस्लर और सहयोगियों (1999) ने पाया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अभिभावकों से मिलने वाले मजबूत प्रोत्साहन और समर्थन विद्यार्थियों को कॉलेज में प्रवेश लेने और नामांकन कराने के लिए प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है। दुर्भाग्यवश, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने अभिभावकों से कॉलेज जाने के लिए कम प्रोत्साहन और समर्थन प्राप्त होता है, और कुछ हद तक निराशा भी प्राप्त होती है। (बिल्सन एंड टेरी, 1982; हॉर्न एंड नुनैज, 2000; लंदन, 1989; टेरेन्जिनी एट अल, 1996; यॉर्क एंडरसन एंड बोमन, 1991) पोस्टसेकंडरी शिक्षा के संपर्क में कमी होने के कारण पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावक, विद्यार्थियों को कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने से होने वाले सामाजिक और आर्थिक लाभों से अवगत नहीं होते हैं (वॉले और फेडेरिको, 1997)। इसके अतिरिक्त, अभिभावकों को कॉलेज की प्रक्रिया के बारे में गलतफहमी हो सकती है, खासकर कॉलेज की लागत और वित्तीय सहायता के बारे में जिसके कारण वे अपने बच्चों को पोस्टसेकंडरी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित नहीं करतें तथा विद्यार्थी हतोत्साहित हो जाते है (वर्गास, 2004)। साक्षात्कार करते समय यह पाया गया कि जब प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेज या विश्वविद्यालय में प्रवेश लेते है तब उन्हें विद्यार्थी कॉलेज या विश्वविद्यालय से काफी अकांक्षायें होती है कि उनकी शिक्षा को सुचारू रूप से चलाने में सहायक होगें किन्तु वहाँ की संस्कृति बिल्कुल ही अलग होने के कारण उन्हें चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

उद्देश्य

- प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में होने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति और अध्ययन का समग्र

प्रस्तुत शोध गुणात्मक पद्धति पर आधारित है और इसकी प्रकृति वर्णनात्मक है इस अध्ययन में तथ्यों के संकलन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में समग्र के रूप में 200 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। उत्तरदाताओं के रूप ऐसे विद्यार्थियों का चयन किया गया है जो अपने परिवार में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला पहला व्यक्ति है। अध्ययन के लिये दो विश्वविद्यालयों, एक केन्द्रिय विश्वविद्यालय एवं एक राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय को चयनित किया गया है, अध्ययन क्षेत्र के रूप में उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले का चुनाव किया गया है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों उच्च शिक्षा में होने वाली चुनौतियों को जानने के लिये साक्षात्कार एवं प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में चुनौतियाँ

प्रथम पीढ़ी का विद्यार्थी होने के कारण इन विद्यार्थियों को अध्ययन कक्ष में भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है वे अध्ययन कक्ष में अपने सहपाठियों से अन्तःक्रिया करने में संकोच करते है तथा इन विद्यार्थियों का अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों में भी कम भागीदारी रहती है और अपने शिक्षकों से भी स्पष्टीकरण करने में संकोच करते है कभी कभी अध्ययन का माध्यम भी उन्हें प्रभावित करता है क्योंकि अधिकांशतः प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अध्ययन का माध्यम हिन्दी होता है और वर्तमान समय में तो कॉलेजों में शिक्षक अंग्रेजी भाषा अध्ययन करवाते है। जिसके परिणामस्वरूप इन विद्यार्थियों को अध्ययन करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। वर्तमान समय में आधुनिक तकनीकियों का बोलबाला चल रहा है नई–नई तकनीकियों का प्रयोग अध्ययन के लिए किया जाता है किन्तु प्रथम पीढ़ी का विद्यार्थियों को इन तकनीकियों का ज्ञान न होने के कारण वे अध्ययन कक्ष में अपने कार्यो का प्रस्तुतीकरण उचित रूप से करने में स्वयं को असमर्थ पाते है। हिन्दी माध्यम में कार्य करने पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को कम सराहना मिलती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए उनकी पृष्ठभूमि भी एक चुनौती के रूप में सामने आती है क्योंकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों का उच्च शिक्षा प्राप्त न करना इन विद्यार्थियों के लिए चुनौती साबित होती है क्योंकि अभिभावकों उच्च शिक्ष का अनुभव न होने के कारण वे अपने बच्चों का उचित मार्गदर्शन नहीं कर पाते कॉलेज के चुनाव और विषयों के चुनाव के बारे उन्हें उचित सुझाव देने में स्वयं को असमर्थ पाते है।किन्तु प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने अभिभावकों से नैतिक सहयोग पूर्ण रूप से प्राप्त होता है। उन्हें प्रवेश प्रक्रिया में भी असुविधा होती है क्योंकि आजकल प्रवेश प्रक्रिया के लिए फॉर्म ऑनलाइन प्रक्रिया के द्वारा भरे जाते है जिसके कारण उन्हें फॉर्म भरने में समस्या होती है। माता–पिता के कम शिक्षित होने के कारण अपने बच्चों से कॉलेज में होने वाली गतिविधियों के विषय में जानकारी भी नहीं ले पाते है कि उन्हें पढ़ाई में कोई समस्या तो नहीं जिन्हें अभिभावक दूर करने का प्रयास कर सकें।

सांस्कृतिक अनुकूलन की चुनौती

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए न केवल अपने अकादमिक और सामाजिक एकीकरण के लिए बाधाओं का सामना करना पड़ता है। बल्कि उन्हें इनके साथ ही सांस्कृतिक अनुकूलन से सम्बन्धित बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है। सांस्कृतिक अनुकूलन से तात्पर्य यह है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालयों की प्रचलित संस्कृति के विषय में ज्ञान नहीं होता है क्योंकि वहाँ का वातावरण घर के वातावरण से बिल्कुल ही भिन्न होता है। विश्वविद्यालय में अन्य विद्यार्थियों के समान व्यवहार को सीखने में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को समय लगता है सभी के साथ सम्बन्ध बनाने में संकोच महसूस करते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेज के वातावरण मे असहज महसूस करते हैं। वे भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते है। इन विद्यार्थियों की कॉलेज जाने की तैयारी इनके साथियों की तुलना में निम्न स्तर की होती है। ऐअपने साथियों और शिक्षकों के साथ सीमित बातचीत करने का कारण बातचीत करने में कम रूचि, अनुभव की कमी, तथा संसाधनों की कमी जिसमें शामिल है। ये अन्तर अकादमिक आत्मसम्मान के स्तर को कम करने एवं कॉलेज में समायोजित करने में योगदान देते हैं।

शिक्षकों से अन्तःक्रिया के रूप में चुनौती

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रायः शिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया करने में कठिनाई होती है वे अपने विचारों को शिक्षकों के समक्ष रखने में संकोच महसूस करते है। कभी कभी अध्ययन कक्ष में स्पष्टीकरण करने में असहजता महसूस करते है इन विद्यार्थियों को प्रतीत होता है कि कहीं जो प्रश्न वे शिक्षक से पूछ रहे हैं वो सही है या कुछ गलत तो इस प्रकार की असहजता के कारण वे अध्ययन कक्ष में शान्त ही रहते है ज्यादा न तो शिक्षकों से अन्तःक्रिया करते है और बहुत ही कम अपने सहपाठियों से भी अन्तःक्रिया करते है।

वित्तीय चुनौतियाँः

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर से आते है उनके लिए कॉलेज में प्रवेश लेने का फैसला बहुत ही कठिन होता है क्योंकि परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत बेहतर न होने के कारण उन्हें वित्तीय समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। कॉलेज की फीस का भुगतान करने के लिए कभी कभी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को पार्ट टाइम जॉब भी करना पड़ता है जिससे वे अपनी शिक्षा को सुचारू रूप से जारी रख सके। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर से आने के कारण उनके पास संसाधनों की कमी होती है। शिक्षा को जारी रखने के लिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा किये जाने वाले पार्ट टाइम जॉब गृहकार्य एवं कॉलेज की गतिविधियों को समर्पित समय के साथ हस्तक्षेप करता है जो सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। कई प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेज को छोड़ देते हैं ताकि वे अपने परिवार का समर्थन करने के लिए और अधिक समय तक काम कर सकें क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति निम्न या मध्यम स्तर की होती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होने के कारण उन्हें शैक्षिक, आर्थिक–सामाजिक, चुनौतियों के साथ ही साथ कई अन्य प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसमें शामिल है–अध्ययन कक्ष में पढाये जाने वाले पाठ्यक्रम से सम्बन्धित, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने वरिष्ठ सहपाठियों से होने वाली असहजता, पुस्तकालय से पुस्तकों के रख–रखाव से सम्बन्धित, पुस्तकालय में पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकों की कम उपलब्धता तथा हिन्दी माध्यम में पुस्तकों की कम उपलब्धता इन विद्यार्थियों के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करती है। जिसके परिणामस्वरूप इन विद्यार्थियों प्रदर्शन अन्य विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर नहीं होता है। इस लिए शिक्षा सभी व्यक्तियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यदि अभिभावक शिक्षित होते है तो उनके बच्चों को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के समान चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

REFERENCES

यॉर्क–एंडरसन, डी.सी., एण्ड बोमन, एस.एल. (1991). ऐसेसिंग द कॉलेज नॉलेज ऑफ फर्स्ट–जेनेरेशन एण्ड सेकेण्ड जेनेरेशन कॉलेज स्टूडेंट्स. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट डेवलपमेंट, 32 (2),116–123।*

बर्कनर, एल. एण्ड शावेज़, एल. (1997). ऐक्सेस टू पोस्टसेकेण्डरी ऐजूकेशन फॉर 1992 हाई स्कूल ग्रेजुएट्स. *वॉशिंग्टन, डीसीः नेशनल सेन्टर फॉर ऐजुकेशन स्टैटिसटिक्स।*

बुई, के. वी. टी. (2002). फर्स्ट–जनरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट्स एट ए फोरईयर यूनिवर्सिटीः बैकग्राउन्ड कैरेक्टरिस्टिक, रीज़न फॉर परसूइंग हायर एजुकेशन, एण्ड फर्स्ट–ईयर एक्सपीरिएन्सेज. कॉलेज स्टूडेन्ट जर्नल।

ब्रायन, एलिजाबेथ, सीमन्स., लेह ऐन. (2009). फैमिली इनवॉल्वमेंटः इम्पैक्ट ऑन पोस्टसेकेण्डरी एजुकेशनल सक्सेज फॉर फर्स्ट–जेनेरेशन एपलाचियन कॉलेज स्टूडेंट्स. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेंट डेवलपमेंट, 50 (4), 391–406।*

मैकमुरे, एंड्रयू जे., सोरेल्स, डारिन. (2009). ब्रिजिंग द गैपः रीचिंग फर्स्ट–जेनेरेशन स्टूडेंट्स इन द क्लासरूम. *जर्नल ऑफ इन्सट्रक्सनल साइकोलॉजी, 36 (3), 210–214।*

बिलसन, जे. एम. एण्ड टेरी, एम. बी. (फॉल 1982). इन सर्च ऑफ द सिल्केन पर्सः फैक्टरस इन एट्रिसन एमन्ग फर्स्ट–जेनरेशन स्टूडेन्टस. कॉलेज एण्ड यूनिवर्सिटी, 57–75।

रिचर्डसन, आर.सी. एण्ड स्किनर, ई. एफ. (1992). हेल्पिंग फर्स्ट जनरेशन माइनॉरिटी स्टूडेन्टस एचीव डिग्री. इन एल.एस. जुएरलिंग एण्ड एच.बी. लंदन (ईडीएस), फर्स्ट जनरेशन कॉलेज स्टूडेन्टसः कन्फर्न्टिंग द कल्चरल इस्यू (पीपी. 29–44). सान फ्रान्सिसको, सीएः जोसे–बास पब्लिशर्स।

गिबन्स, मेलिंडा एम., बॉर्डर्स, डायने एल. (2010). प्रोस्पेक्टिव फर्स्ट–जेनेरेशन कॉलेज स्टूडेंट्सः ए सोशल–कॉगनिटिव

परस्पेक्टिव. द कैरियर डेवलपमेंट क्वार्टली, 58 (3), 194–209।

हॉर्न, एल. एण्ड नुनैज, ए. (2000). मैपिंग द रोड टू कॉलेजः फर्स्ट जेनेरेशन स्टूडेन्टस मैथ ट्रैक, प्लानिंग स्ट्रैटिजीस, एण्ड कॉन्टेक्सट ऑफ सर्पोट. *वॉशिंग्टन, डीसीः नेशनल सेन्टर फॉर ऐजुकेशन स्टैटिसटिक्स।*

हसलर, डी., शमित, जे., एण्ड वेस्पर, एन. (1999). गोइंग टू कॉलेजः हाव सोशल, इकोनोमिक, एण्ड ऐजुकेशनल फैक्टर इन्फूलूएन्स द डीसीज़न स्टूडेन्अ मेक. *बाल्टीमोर, एमडीः द जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस।*

पेनरोज़, ए.एम. (2002). एकेडमी लिट्रेसी परसेप्शन एण्ड परफॉमेन्सः कम्पेयरिंग फर्स्ट–जनरेशन एण्ड कन्टीन्यूइंग जनरेशन कॉलेज स्टूडेन्ट. रिसर्च इन द टीचिंग ऑफ इंग्लिश, 36 (4), 437–461।

वोले, के. एण्ड फेडेरिको, ए. (1997). मिस्ड अपरचुनिटीज़ः ए न्यू लुक एट डिसएडवान्टेज कॉलेज एसपारेंट्स. वॉशिंग्टन, डीसीः द ऐजुकेशन रिर्सोस इन्सटीट्यूट एण्ड द इन्सटीट्यूट फॉर हायर ऐजुकेशन पॉलिसी।

क्रूस, टी.एम., किन्ज़ी, जे.एल., विलियम्स, जे.एम., मोरेलन, सी.एल. एण्ड ज़िंगमिंग, वाई. (नवम्बर 2005). द रिलेशनशिप बिटवीन फर्स्ट–जनरेशन स्टेटस एण्ड एकेडमी सेल्फ–इफिसिएन्सी एमन्ग एन्टरिंग कॉलेज स्टूडेन्ट्स. पेपर परजेन्टेड एट द 30 एनुवल मीटिंग ऑफ द एसोशिएशन फॉर द स्टडी ऑफ हायर एजुकेशन (एएसएचई)।

वर्गास, जे.एच. (2004). कॉलेज नॉलेजः ऐडरेसिंग इनफॉरमेसन बैरियर टू कॉलेज. बोस्टन, एमएः द ऐजुकेशन रिर्सोस इन्सटीट्यूट (टीईआरआई)।

चॉय, एस. (2001). स्टूडेन्टस हूज पैरेन्टस डिड नॉट गो टू कॉलेजः पोस्टसेकेण्डरी ऐक्सेस, परसिटेन्स, एण्ड अटैनमेंट. *वाशिंग्टन, डीसीः नेशनल सेन्टर फॉर ऐजुकेशन स्टैटिसटिक्स।*

ओलिवरेज़, पी.एम. एण्ड टियरनी, डब्ल्यू. जी. (2005). शो अस द मनीः लो–इनकम स्टूडेन्टस, फैमिलीज़, एण्ड फाइनेन्सियल ऐड. लॉस एंजिल्सः *सेन्टर फॉर हायर ऐजुकेशन पॉलिसी ऐनालिसिस.*

टॉरेस, वस्ति, हर्नांडेज़, एबेलिया. (2009). इन्फूलूएन्स ऑफ एन आइडेन्टीफाइड एडवाइजर/मेंटर ऑन अर्बन लेन्टिनों स्टूडेंट्स कॉलेज एक्सपिरिएन्स. *जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेंट् रीटेन्सन रिसर्च, थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस, 11(1), 141–160।*

टॉर्नेत्ज़की, एल.जी., कटलर, आर., एण्ड ली, जे. (2002). कॉलेज नॉलेजः व्हॉट लैन्टिनों पैरेन्टस नीड टू नो एण्ड व्हाई दे डोन्ट नो इट. क्लेरमॉन्ट, सीएः टॉमस रिवेरा पॉलिसी इंस्टीट्यूट।

टेरेंजिन, पी.टी., स्प्रिंगर, एल., येगर, पी.एम., पास्करेला, ई.टी., एण्ड नोरा, ए. (1996). फर्स्ट–जेनेरेशन कॉलेज स्टूडेंट्सः कैरेक्टरिस्टिक, एक्सपीरिएन्स, एण्ड कॉग्नेटिव डेवलपमेंट. *रिसर्च इन हायर ऐजुकेशन, 37(1),1–22।*

लंदन, एच.बी. (1989). ब्रेकिंग अवेः ए स्टडी ऑफ फर्स्ट जनरेशन कॉलेज स्टूडेन्टस एण्ड देयर फैमिलीज़ अमेरिकन जर्नल ऑफ ऐजुकेशन, 97 (1), 144–170।